Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 5 | Issue : 5 | May 2019



SHIKSHAK – PRASHIKSHAN MAHAVIDHYALAYO ME KARYARAT PRADHYAPAKI KI SAMAJIK GATISILTA KA ADHYAYAN

शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन

Dr. Naresh Kumar

Assistant Professor, Taj Memorial T.T. College, Kotputli, District-Jaipur (Rajasthan), India.

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन विभिन्न आयाम, सामाजिक गतिशीलता, शैक्षिक गतिशीलता, व्यवसायिक गतिशीलता, भौगोलिक गतिशीलता आन्तर्पीढ़ी गतिशीलता के अन्तर्गत किया गया हैं। अध्ययन हेतु राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से सम्बद्ध शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत कुल 400 प्राध्यापकों का चयन किया गया है। शोधकर्ता द्वारा प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता को जानने के लिए स्वनिर्मित उपकरण के रूप में प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर 45 प्रश्नों का चयन कर अन्तिम रूप दिया गया है एवं प्रमापीकृत किया गया।

KEY WORDS : शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सामाजिक गतिशीलता

प्रस्तावना :

वर्तमान दशक में सामाजिक गतिशीलता व सामाजिक स्तरीकरण समाजशास्त्रीय व शिक्षा के अध्ययन का मुख्य विषय रहा है। 1950 के बाद के वर्षों में गतिशीलता से सम्बन्धित तथ्य एवं घटनाऐं हमें यह बताते हैं इसका सम्बन्ध औघोगिकरण एवं शहरीकरण से है। 20वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में आर्थिक विकास, वैश्वीकरण व शिक्षा के प्रसार ने व्यवसाय के नवीन अवसर एवं नये क्षेत्रों ने व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति को परिर्वर्तित किया है। औघोगिक व शहरीकरण आदि से सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या को नई परिस्थिति में बदलकर रख दिया है।

समाजशास्त्रीय परम्पराओं की ओर अगर हम देखे जो काम्टे (1798–1857) ने समाज शास्त्र को दो भागों में विभाजित किया था। प्रथम सामाजिक स्थिति विज्ञान और दूसरी सामाजिक गति विज्ञान। सामाजिक स्थिति विज्ञान समाज की संरचना से सम्बंधित है और सामाजिक गति विज्ञान उसके विकास से सम्बन्धित है। सामाजिक स्थिति विज्ञान की सार्थकता यह है कि यह विज्ञान सामाजिक व्यवस्था के मूल सिद्धान्तों से हमारा परिचय करवाता है, ताकि हम उनके महत्व को समझकर अपने सामाजिक जीवन को इस प्रकार संगठित करे जिससे सामाजिक सन्तुलन बिगड़ने न पाये और मानव के भौतिक, नैतिक तथा बौद्धिक तीनों पक्षों का सन्तुलित विकास सरल हो सके इसे ही सामाजिक नियंत्रण कह सकते हैं। समाज शास्त्र का दूसरा प्रमुख भाग सामाजिक गति विज्ञान है। सामाजिक गति विज्ञान की आवश्यकता या प्रगति का अध्ययन है। यह मानवता की आवश्यक तथा निरन्तर गति का विज्ञान है। इसके अन्तर्गत वे निश्चित नियम आ जाते है, जिसके अनुसार समाज का क्रमिक विकास या परिर्वतन होता है।

सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन में परेटो की अवधारणा काफी महत्व रखती है। उनके द्वारा प्रतिपादित अभिजात वर्ग के परिभ्रमण की अवधारणा महत्वपूर्ण है। पेरेटो के अनुसार इस अभिजात – वर्ग के अन्तर्गत निरन्तर ऊपर नीचे आने जाने की एक प्रक्रिया चलती रहती है जिसे कि पेरेटो ने अभिजात के परिभ्रमण की संज्ञा दी है। दूसरे शब्दों में सामाजिक संस्तरण की एक प्रमुख विशेषता यह होती है कि कोई भी वर्ग विशेषकर अभिजात वर्ग अधिक स्थिर नहीं होता अपने जीवन में प्राप्त सफलता या असफलता के अनुसार निम्न वर्ग के व्यक्ति उच्च वर्ग में आ सकते है तथा उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग में जा सकते है। इस परिभ्रमण की गति प्रत्येक समाज में एक–सी नहीं होती। परन्तु परिभ्रमण की प्रक्रिया प्रत्येक समाज में होती अवश्य है, क्योंकी कोई भी वर्ग पूर्णतया बंद वर्ग हो सके, ऐसा सम्भव नहीं। वास्तव में प्रत्येक समाज में किसी न किसी गति से अभिजातों के परिभ्रमण की प्रक्रिया चलती ही रहती है। उसी प्रकार अभिजातों के परिभ्रमण की तीव्रता प्रत्येक समाज में भिन्न भिन्न होती है। उपयुर्क्त विवरण से यह स्पष्ट है कि परेये के मतानुसार अभिजात वर्ग का पतन तथा निम्न वर्ग का उत्थान या उपर की ओर चढ़ना हर समाज में हर समय होता रहता है। परेये के मतानुसार सामाजिक संरचना में जो उच्च–निम्न का संस्तरण होता है, वह मोटे तौर पर दो वर्गों द्वारा होता है। उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग। इनमें से कोई भी वर्ग स्थिर नहीं होता अपितु उनमें चक्रीय गति पाई जाती है।

सामाजिक गतिशीलता शब्द 'सामाजिक' एवं 'गतिशीलता' के योग से बना सार्थक शब्द है। 'सामाजिक' का अर्थ है समाज विषयक जबकि 'गतिशीलता' का अर्थ है गमन करना – अग्रसर होना, एक स्थान विशेष से दूसरे स्थान पर चलना तथा स्थिति परिर्वतन अर्थात् एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति को प्राप्त करना ही सामाजिक गतिशीलता है। यह सामाजिक स्थिति उच्च भी हो सकती है और निम्न भी। एक परम्परागत और रूढ़िवादी समाज से वैज्ञानिक और प्रौघोगिकी सम्पन्न आधुनिक समाज की उपलब्धि सामाजिक गतिशीलता है। इस प्रकार शोधकर्ता ने शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन करने का मानस बनाया।

समस्या कथन :

''शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन''

तकनीकी शब्दों का पारिभाषीकरण :

शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय :

ऐसे महाविद्यालय जहाँ माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यह महाविद्यालय राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त होते है।

सामाजिक गतिशीलता :

किसी व्यक्ति या समूह का एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में गमन करना ही सामाजिक गतिशीलता कहलाता है। अर्थात् सामाजिक गतिशीलता से आशय सामाजिक समूह तथा स्तरों में किसी व्यक्ति का एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में पहुँच जाना है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन करना।
2. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की शैक्षिक गतिशीलता का अध्ययन करना।
3. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की व्यवसायिक गतिशीलता का अध्ययन करना।
4. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की भौगोलिक गतिशीलता का अध्ययन करना।
5. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की आन्तर्पीढ़ी गतिशीलता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

1. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता पाई जाती है।
2. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की शैक्षिक गतिशीलता पाई जाती है।
3. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की व्यवसायिक गतिशीलता पाई जाती है।
4. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की भौगोलिक गतिशीलता पाई जाती है।
5. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की आन्तर्पीढ़ी गतिशीलता पाई जाती है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से सम्बद्ध शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों का 20 प्रतिशत अर्थात् कुल 400 प्राध्यापक न्यायदर्श के रूप में चयन किया गया है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

शोधकर्ता ने राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता को जानने के लिए स्वनिर्मित उपकरण के रूप में प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में 5 आयामों के अन्तर्गत कुल 45 प्रश्न है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिशत एवं काई वर्ग सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

प्रदतों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

1. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता पाई जाती है।

तालिका–1

वर्ग	अभिभावक	प्राध्यापक	काई वर्ग मान
निम्न	12	–	35.88
निम्न – मध्यम	33	6	
मध्यम	215	220	
उच्च – मध्यम	93	104	
उच्च	47	70	
योग	400	400	

स्वतंत्रता अंश (df) = 4

उपर्युक्त तालिका 1 में शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यपकों एवं उनके अभिभावकों के सामाजिक, आर्थिक स्तर को दर्शाया गया है। स्वतंत्रता अंश 4 पर काई वर्ग मान तालिका मूल्य 0.01 सार्थकता स्तर पर 13.277 है। गणना करने पर काई मान 35.88 प्राप्त हुआ। जो सारणीयन मान अधिक है। अतः परिकल्पना शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की सामाजिक गतिशीलता पाई जाती है, स्वीकृत की जाती है।

2. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की शैक्षिक गतिशीलता पाई जाती है।

तालिका–2

वर्ग	अभिभावक	प्राध्यापक	काई वर्ग मान
उच्च प्राथमिक	55	–	493.2
माध्यमिक	65	–	
उच्च माध्यमिक	123	–	
स्नातक	60	–	
अधिस्नातक	67	330	
विद्या वारिधि	30	70	
योग	400	400	

स्वतंत्रता अंश (df) = 5

3. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की व्यवसायिक गतिशीलता पाई जाती है।

तालिका–3

वर्ग	अभिभावक	प्राध्यापक	काई वर्ग मान
कुलीन वर्ग	55	400	480
व्यावसायिक वर्ग	65	–	
मंत्रालयिक कर्मचारी वर्ग	123	–	
तकनीकी कर्मचारी वर्ग	60	–	
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी वर्ग	67	–	
अकुशल वर्ग	30	–	
योग	400	400	

स्वतंत्रता अंश (df) = 5

उपर्युक्त तालिका 3 में शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों एवं उनके अभिभावकों की व्यवसाय को दर्शाया गया है। स्वतंत्रता अंश 5 पर काई वर्ग मान तालिका मूल्य 0.01 सार्थकता स्तर पर 15.086 है। गणना करने पर काई मान 480 प्राप्त हुआ। जो सारणीयन मान अधिक है। अतः परिकल्पना शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की व्यावसायिक गतिशीलता पाई जाती है, स्वीकृत की जाती है।

4. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की भौगोलिक गतिशीलता पाई जाती है।

तालिका–4

वर्ग	अभिभावक	प्राध्यापक	काई वर्ग मान
शहर	28	124	249.7
कस्बा	95	152	
गांव	73	111	
ढाणी	204	13	
योग	400	400	

स्वतंत्रता अंश (df) = 3

उपर्युक्त तालिका 4 में शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों एवं उनके अभिभावकों के निवास स्थान परिर्वतन को दर्शाया गया है। स्वतंत्रता अंश 3 पर काई वर्ग मान तालिका मूल्य 0.01 सार्थकता स्तर पर 11.345 है। गणना करने पर काई मान 249.7 प्राप्त हुआ। जो सारणीयन मान अधिक है। अतः परिकल्पना शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों में भौगोलिक गतिशीलता पाई जाती है, स्वीकृत की जाती है।

5. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों की आन्तर्पीढ़ी सामाजिक गतिशीलता में पाई जाती है।

तालिका–5

कारक	संख्या	प्रतिशत
शिक्षा	271	67.75
धन	72	18
जाति	41	10.25
भाग्य	16	4
योग	400	100

उपर्युक्त तालिका 5 में शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों एवं उनके अभिभावकों में आन्तर्पीढ़ी सामाजिक गतिशीलता को दर्शाया गया है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 67.75 प्रतिशत प्राध्यापकों ने स्वीकारा कि शिक्षा द्वारा आन्तर्पीढ़ी सामाजिक गतिशीलता हुई है। जबकि धन को सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाला कारक 18 प्रतिशत, जाति 10. 25 प्रतिशत एवं भाग्य द्वारा 4 प्रतिशत आन्तर्पीढ़ी सामाजिक गतिशीलता हुई है। अवलोकित परिणामों से स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों में शिक्षा द्वारा सबसे अधिक आन्तर्पीढ़ी सामाजिक गतिशीलता पाई जाती है। आन्तर्पीढ़ी सामाजिक गतिशीलता को लाने में शिक्षा की अहम् भूमिका होती है।

निष्कर्ष :

1. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राध्यापकों में सामाजिक गतिविधियां पाई जाती है। परिणामों के आधार पर स्पष्ट होता है कि शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों का सामाजिक, आर्थिक स्तर उनके अभिभावकों की तुलना में उच्च पाया जाता है। अर्थात् शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं उनके अभिभावकों के मध्य सामाजिक गतिशीलता पाई जाती है।

2. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राध्यापकों के शैक्षिक स्तर उनके अभिभावकों से उच्च पाया गया। इसका कारण भारत में वर्तमान समय में शिक्षा का स्तर निरंतर बढ़ रहा है। जिसके कारण अभिभावक अपने बालकों को शिक्षा की ओर अधिक ध्यान देते है। और उन्हें उच्च शिक्षा की ओर प्रेरित करते है। जिसके कारण शैक्षिक गतिशीलता में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

3. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों में व्यावसायिक गतिशीलता पाई जाती है। तथापि यह सत्य भी है कि शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों की व्यावसायिक गतिशीलता उनके अभिभावकों की तुलना में अत्यधिक उच्च हैं जिसके कारण 80 प्रतिशत से अधिक प्राध्यापकों में अपने अभिभावकों से अलग व्यवसाय को अपनाया है।

4. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों में भौगोलिक गतिशीलता पाई जाती है। यह इसका प्रतीक है कि शैक्षिक और व्यावसायिक गतिशीलता के कारण प्राध्यापकों में ढाणी से गांव, गांव से कस्बा, कस्बा से शहर की ओर पलायन की प्रवृति बढ़ी है।

5. शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों में आन्तर्पीढ़ी

गतिशीलता पाई जाती है शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के 67.75 प्रतिशत प्राध्यापकों ने स्वीकारा की शिक्षा आन्तर्पीढ़ी सामाजिक गतिशीलता हुई है। जबकि धन द्वारा सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले कारक 18 प्रतिशत, जाति 10.25 प्रतिशत एवं भाग्य द्वारा 4 प्रतिशत आन्तर्पीढ़ी सामाजिक गतिशीलता पाई गई।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. Blau, Peter M. : "Social Mobility and Interpresonal Relations", in American Sociological Review, Vol. 21, No. 3, 1956.
2. Bose, Pradeep K. : "Social Mobility and Caste Violence : A Study of Gujarat Riots", in Economics and Political Weekly, Vol. XVI, No. 16, 1981
3. Gairat, Henari E. : Statical approach in Education and Psychology Kalyani Publishers, New Delhi, 2011
4. Glauber R. & Conley D. : Research in Social Stratification and Moblity, Vol. 26, Nov. 2008.
5. Kapil, H.K. : "Research Methology", Har Prasad Bhargav Publication Agra, 2004.
6. Majumder, Rajarshi : Intergenerational Mobility in Educaitonal and Occupational Attainment. A comparative Study of Social Classes in India, 2010
7. Maijjhu, Ramesh Kumar : Higher Education and Social moblility an interdisciplinary study of the impact of university education on the carrers and attitude of graduate in Jammu & Kashmir. Ph.D. (Eduation) of Pune, 1992
8. Neelson, J.P. : "The Impact of Educaiton on the Social Stratification in India", in Journal of Social Research, Vol. 15, No. 2, 1972
9. Shrivastav, D.N. : "Research Methology", Sahitya Prakashan, Agra, 2007
10. Singh, Arun Kumar : "Research Methology in Psychology, Sociology and Education , Motilal Banarsidas Publication, New Delhi, 2013